International Journal of Sanskrit Research 2020; 6(6): 14-17

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2020; 6(6): 14-17
© 2020 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 30-08-2020
Accepted: 17-10-2020

डॉ. प्रेमलता सिंह
असिस्टेण्ट प्रोफेसर (संस्कृत)
पवित्रा डिग्री कालेज, मानीराम,
गोरखपुर, उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
डॉ. प्रेमलता सिंह
असिस्टेण्ट प्रोफेसर (संस्कृत)
पवित्रा डिग्री कालेज, मानीराम,
गोरखपुर, उत्तर प्रदेश, भारत

वैदिक पर्यावरण संरक्षण-एक विमर्श

डॉ. प्रेमलता सिंह

प्रस्तावना

पर्यावरण एक व्यापक शब्द है। यह उन संपूर्ण शक्तियों, परिस्थितियों, एवं वस्तुओं का योग है जो संपूर्ण मानव जगत को आवृत करती है। तथा उनके क्रियाकलापों को अनुशासित करती है।

पर्यावरण शब्द की उत्पत्ति परि उपसर्ग(परितः) एवं आवरण(आवृणोति, आच्छादयति) के संयोग से हुई है।

परितः अर्थात् चारों तरफ एवं आवरण अर्थात् घेरा। तात्पर्य है पर्यावरण उन सभी भौतिक, रासायनिक एवं जैविक कारकों की समष्टिगत ईकाई है, जो प्रत्येक जीवधारी को चारों तरफ से आवृत करती है।

समान्य अर्थों में पर्यावरण हमारे जीवन को प्रभावित करने वाले सभी जैविक और अजैविक तत्वों प्रक्रियाओं और घटनाओं के समुच्चय से निर्मित ईकाई है। मानव एवं पर्यावरण के मध्य अन्योन्याश्रय सम्बन्ध है।

21वीं सदी में मानव एवं पर्यावरण सम्बन्ध प्रतिकूल हो गया है। जैसे दिन प्रतिदिन पर्यावरण का बदलता स्वरुप एक शोचनीय विषय बना हुआ है तथा वैज्ञानिकों को शोध के लिए उत्सुक कर रहा है।

आज पर्यावरणीय अनेक ज्वलन्त समस्याए हैं जैसे ओजोन क्षरण, ग्लोबलवार्मिंग, समुद्र स्तर में वृद्धि, विभिन्न विनाशक तूफान, बाढ़, सूखा, चक्रवात, इत्यादि। इनका विनाशक विकराल रुप प्रतिदिन मानव को प्रत्यक्ष या परोक्ष रुप में प्रभावित कर रहा है। यदि हम ओजोन क्षरण की बात करें तो यह सर्वविदित है कि ओजोन को पृथ्वी का रक्षा कवच या पृथ्वी का छाता कहा जाता है। जैसे मानव एवं धूप वर्षा के मध्य छाता आवरण का कार्य करती है उसी प्रकार ओजोन परत भी पृथ्वी एवं पराबैंगनी किरणों (Ultraviolet Ray) के मध्य आवरण का कार्य करती है जिससे पृथ्वी गर्म होने से बचती है पृथ्वी पर निवास करने वाले जीव उसके प्रभाव से स्वयं ही बचे रहते हैं। अप्रैल 1991 में ही नासा वैज्ञानिकों द्वारा शोध किया गया है कि गत एक दशक में ओजोन परत का 4.5 से 5.0 प्रतिशत ह्रास हुआ है।[1]

इसका प्रभाव अनेक त्वचा सम्बन्धी (Skin related) बिमारी जीव-जन्तुओं की संकटापन्न अवस्था पर स्पष्ट दृष्टिगत है।

आज प्रतिदिन प्रदूषण का स्तर वृद्धि की तरफ अग्रसर है। स्टेट आफ ग्लोबल एयर 2019 रिपोर्ट के अनुसार लगभग 50 लाख लोगों की मृत्यु वायु प्रदुषण से हो चुकी है।

यदि हम ग्लोबल वर्मिंग की बात करें तो मई 2016 में राजस्थान के फलोदी का 51 डिग्री सेल्सियस तापमान रिकार्ड किया गया जो तत्कालीन समय का सर्वाधिक तापमान था। इन समस्याओं पर दूरगामी एक श्रृंखला के रुप में पर्यावरण पर प्रभाव होता रहेगा जिसका दुष्परिणाम और भी भयावह हो सकता है। प्रकृति संकेत कर रही है जिससे आज हम ग्लोबलवर्मिंग व जलवायु की चुनौतियों से जूझ रहे हैं।

आज भी हम सुनामी (26 Dec 2014), केदारनाथ त्रासदी (जून 2013), केरल बाढ़ (जुलाई 2018) इत्यादि प्राकृतिक आपदा के केवल श्रवण मात्र से सिहर जाते है। अर्थव्यवस्था विकास की दौड़ में हम मानव इतना आगे बढ़ जाना चाहते है कि प्रकृति के भयावह एवं विकराल रुप का रञ्च मात्र भी भय नही है। अन्ताराष्ट्रिय स्तर पर उच्च स्थान प्राप्त करने की होड़ में हमें अपने पूर्वजो, ऋषियों, मुनियों द्वारा दी गयी पर्यावरण संरक्षण की परम्परा का अनुगमन किया जाना चाहिए प्रकृति के उद्वेलित रुप को पूर्वज परम्परा प्रदेय वेद, दर्शन, पुराण, शास्त्र, आदि ग्रन्थों के अनुशीलनोपरान्त उसका समुचित संरक्षित, संधारणीय(Sustainable) प्रयोग किया जा सकता है तथा विकास को गतिमान रखा जा सकता है।

आज एक आवधारणा वैज्ञानिकों के मध्य समादृत है सतत् विकास या संधारणीय विकास (Sustainable development) अर्थात् विकास की वह अवधारणा जिसमे पर्यावरण (प्रकृति) को नुकसान पहुचाए बिना भावी पीढ़ी को ध्यान में रखकर वर्तमान विकास की दर को जारी रखना। हमारे संस्कृत वैदिक ग्रंथ इसी आवधारणा के पूर्वज हैं।

संभवतः पूर्व राष्ट्रपति डॉ **A. P. J.** अब्दुल कलाम हमारे पूर्वजों के ग्रंथो के अनुशीलनों परान्त ही ये कहने को बाध्य हुए कि "हमे विज्ञान एवं प्रैद्योगिकी के अनुप्रयोग के माध्यम से पानी, उर्जा, निवास स्थान, कचरा प्रबन्धन व पर्यावरण के क्षेत्रों मे पृथ्वी द्वारा झेली जाने वाली समस्याओं को ध्यान में रखकर दूर करने के लिए कार्य करना होगा।"

वैदिक ग्रंथो में पर्यावरण संरक्षण का स्थान सर्वोपरि है। जहाँ मानव जीवन को सदैव मूर्त व अमूर्त रुप में पृथ्वी, जल, वायु, आकाश, सूर्य, चन्द्र, नदी, वृक्ष, पशु, पक्षी, आदि के साहचर्य में दिखाया गया। पर्यावरण संरक्षण की परिकल्पना उतनी ही प्राचीन है जितनी की जीव जगत का इतिहास। पर्यावरण संरक्षण की परिकल्पना अति पुराकाल में भी विचारणीय थी परन्तु स्वरुप में भिन्नता देखी जा सकती है। उस समय कोई राष्ट्रीय वन नीति या दण्ड स्वरुप कुछ अन्य कोई नियमित संस्था नही थी जो व्यक्ति को संरक्षित करने को बाधित करे। पर्यावरण संरक्षण हमारे दिन प्रतिदिन के व्यवहार कार्य कलाप से संयुक्त था। वैदिक साहित्य में पर्यावरण संरक्षण को विश्व कल्याण की आधारशिला कहा गया है। वेदों से यह संदेश प्रसारित होता है कि मानव वेद विहित मार्ग का अनुसरण करके सौ वर्षों तक सुखपूर्वक जीवन यापन कर सकता है। वेदों मे वैदिक शान्तिपाठ के द्वारा सभी तत्त्वों के मध्य तारतम्यता को स्थापित करते हुए दुःखत्रय की निवृत्ति का बोधक कहा गया-

> ऊँद्यौ शान्तिरन्तरिक्षः शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयो शान्तिः वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्मशान्तिः सर्वः शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि।
> ऊँ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।[2]

प्राचीन काल में प्रकृति जड़ मात्र कल्पित नही है अपितु एक दिव्य तेज के रुप मे प्रतिस्थापित है जैसे मातृरुपा पृथ्वी प्राणरुपा जल, सृष्टि प्रवर्तक तेज, जीवन के अधिष्ठानभूत पञ्चमहाभूत और जीव या मानव का पृथ्वी पुत्र होना अर्थवेद कहता है–

> माता भूमिः पुत्रोSहं पृथिव्याः। [3]

पूरा वेद ही इस भावना से ओत प्रोत है। मनुष्य के कल्याणकारी रुप में प्रकृति को सम्बन्धी के रुप में सम्बोधित किया गया है।

> स वह्निः पुत्र पुत्रोः पवित्रवान् पुनाति धीरो भुवनानि मायया।
> धेनुं चं पृश्निं वृषभं सुरेतसं विश्वाहा शुक्रं पयो अस्य धुक्षत।[4]

ते नो गृणाने महिनी महि श्रवः क्षत्रं द्यावापृथिवी घासथो बृहत् येनाभि कृष्टीस्ततनाम विश्वहा पनाय्यमोजो अस्मे समन्वितम्। [5]

आज भी हमारे घरों में यदि युवा पीढ़ी की छोड़ दिया जाय तो हमारी पृथ्वी माता रुप में ही पूजित है और सर्वप्रथम प्रातःकाल पृथ्वी पर अपने चरण रखने से पूर्व प्रणाम एवं आभार प्रकट का प्रचलन देखा जाता है। पर्यावरण एवं मानव में संतुलन बनाये रखना पर्यावरण संरक्षण की अनिवार्य शर्त है।

ऋग्वेद में जल को मन प्रसन्न रखने वाला बताया गया है-

मनारुहाणा अति यन्त्यापः [6]

अथर्ववेद में भुवन को आच्छादित करने वाले तीन तत्व जल(अप्), वायु एवं वनस्पति(औषधि) बताये गये है।

त्रीणि छन्दासि कवयो वि येतिरे पररुपं दर्शतं विश्वचक्षणम् आपो वाता ओषधयः। तान्येकस्मिन् भुवन अर्पितानि।[7]

हमारा शरीर पञ्चमहाभूतों (पृथ्वी, अग्नि, जल, वायु एवं आकाश) से बना है। आकाश को अवकाश एवं पृथ्वी को आधार कहा गया शेष तीन तत्व हमारे शरीर में वात, पित्त एवं कफ रुप में है। जल का सम्बन्ध कफ से है। अग्नि का सम्बन्ध पित्त से है एवं वायु का सम्बन्ध वात से है। इन तीनों का शरीर में साम्य निरोगिता एवं वैषम्य रोगिता का परिचायक है। यदि इन पर्यावरणीय तत्वों में साम्यता नही रही तो हमारी पूरी सभ्यता रोगी हो जायेगी।

वैदिक ग्रन्थों में प्रकृति को देव रुप में अहवाहन करते हुए कहा गया है–

आपो देवीरुपहवये यत्र गावः पिबन्ति नः सिन्धुभ्यः कर्त्वं हविः। अर्थात् हमारी गाये जिस जल को पीती है उसी का हम अहवाहन करते है जो जल नदी रुप में बहता है उसे हवि देना हमारा कर्त्तव्य है।

ऋग्वेद का अप् सूक्त एवं अथर्ववेद का भूमि सूक्त पर्यावरण संरक्षण पर पूर्ण रुप से प्रतिपादित है। ऋषियों द्वारा प्रतिपादित किया गया है कि-

वनस्पति वनआस्थापयध्वं निष्दधिध्वम् अखनन्त उत्सम्[8]

अर्थात् वनस्पति लगाओ और उसे बचाओं क्योंकि ये दोनों ही जल स्रोतों की रक्षा करते है।

उपनिषद् कहती है–

हे अश्वरुपधारी परमात्मा। बालू तुम्हारे उदरस्थ अर्धजीर्ण भोजन है, नदियां तुम्हारी नाड़ी है, पर्वत पहाड़ तुम्हारे हृदयखण्ड है, समस्त वनस्पति, वृक्ष एवं औषधि तुम्हारे रोम है ये सभी हमारे लिए शिव बनें। हम नदी वृक्षादि को तुम्हारे अङ्गरुप समझकर इनका सम्मान एवं संरक्षण करें। ईशावास्योपनिषद् में जगत को प्रकृति का दोहन बिना आसक्ति(लालच) के करने का संदेश दिया गया है।

ईशावास्यमिंद सर्व यत्किञ्चित् जगत्या जगत्
तेन व्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्यस्विद्धनम्।[9]

इसी अवधारणा का अनुगमन कर पर्यावरणविदों, भूगोलविदों एवं अन्य महापुरुषों यथा राष्ट्रपिता महात्मा गांधी, पूर्व राष्ट्रपति अब्दुल कलाम आदि द्वारा प्रकृति का दोहन भावी पीढ़ी को ध्यान में रखकर करने की कहा गया है। भूगोलविदों द्वारा संधारणीय विकास (Sustainable development) की अवधारणा इसी संदेश को पुष्ट करती है। प्रकृति का उपभोग हितभुक् मितभुक् एवं ऋतभुक् होना चाहिए।

वैदिक ग्रंथो में प्रकृति को पूजनीय रुप मे ही माना गया है

नमो हिरण्ये बाहवे सेनान्ये दिशां च पतये नमो नमः
वृक्षेभ्यो हरिकेशोभ्यः पशुनां पतये नमो नमः शष्पिञ्जराय
त्विषमिते पथीनां पतये नमो नमः हरिकेशायोपवी तिने पुष्ठा
पतये नमो नमः नमो वृक्षोभ्यो.....औषधीनां पतये नमः[10]

आज 21 वी, शदी में वर्तमान पीढ़ी प्रकृति प्रकोप के कई उदाहरणों की साक्षी है एवं पर्यावरणीय प्रकोप के समक्ष स्वयं को असहाय पाती है। वर्तमान पीढ़ी को ध्यान में रखते हुए ही राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने कहा था कि "प्रकृति के भण्डार में हर किसी के जरुरत को

पूरा करने का यथेष्ठ संसाधन है परन्तु किसी के लालच को पूरा करने में वह भण्डार समर्थ नही है।''

वैदिक ऋषि शांतिपाठ के माध्यम से शांति की कामना करते हैं और ये शांति प्रद तभी हो सकते है जब हम सब इनका सभी स्तरों पर संरक्षण करें।

वर्तमान में पर्यावरणीय दुष्परिणाम को दिल्ली के आस-पास के क्षेत्रों में प्रत्यक्ष रुप से देख सकते है जिसमें वायु गुणवता सूचकांक (AQI) सामान्य से बहुत अधिक है जो मानव स्वास्थ्य के लिए अति हनिकारक है। इसी प्रकार अनेक प्रकृति के प्रकोप राष्ट्रीय एवं अन्ताराष्ट्रिय स्तर पर प्रत्यक्ष देखी जाती है।

आज पुनः सम्पूर्ण मानव जाति को प्रकृति को एक चेतन तत्त्व मानकर उसका उपभोग करना चाहिए। आज ये सब कर्मकाण्ड करना कई प्रकार से वस्तुतः भले ही जनमानस को अर्थहीन या Out of date लगते हो पर ये सब मिलकर प्राचीन भारत के लोक चिन्तन में विद्यमान रही किसी व्यापक पर्यावरणीय संवेदना का आभास तो कराते ही हैं। वृक्षों को देव प्रतीक रुप में वर्णित एवं विधिवत् पूजा अर्चना तथा सुरक्षा के जो नियम लौकिक या शास्त्रीय परम्परा में प्रतिपादित रहे हैं वे पर्यावरण संरक्षण के वर्तमान कानूनों के पूर्वज तो अवश्य ही कहे जा सकते हैं।

सन्दर्भ

1. प्रतियोगिता दर्पण Feb 2019 पृष्ठः- 114
2. यजुर्वेद 36/17
3. अर्थवेद12/1/12
4. ऋग्वेद 1/160/3
5. ऋग्वेद 1/160/5
6. ऋग्वेद 10/9/4
7. अथर्ववेद 18/1/17
8. ऋग्वेद10/101/10
9. ईशा/1
10. यजुर्वेद16/17-20